Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848
Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

Annual Subscriptioon: Rs-210/-
(Per Issue: Rs-20/-
Weight: 50-100gms/Issue

अप्रैल/2021ई०

आदरणीय शाह महमूद अहमद नाज़िम मज्लिस अंसारुल्लाह भोजपुर, गया, पटना, अरवल सूपेरिंटेंडेंट पुलिस को पुस्तक "विश्व संकट और शांति पथ" भेंट करते हुए।

मुस्लेह मौऊद दिवस के शुभ अवसर पर मजिल्स अंसारुल्लाह कादियान द्वारा आयोजित खेल कूद प्रतियोगिताओं के पश्चात पुरस्कार वितरण समारोह के समय आदरणीय तय्यब अली साहिब दरवेश के साथ ली गई एक ग्रुप फ़ोटो।

आदरणीय उपमुख्यमंत्री ओ पनीरसेल्वम तमिलनाडु को मज्लिस अंसारुल्लाह तमिलनाडु के सदस्य पुस्तक "विश्व संकट और शांति पथ" भेंट करते हुए।

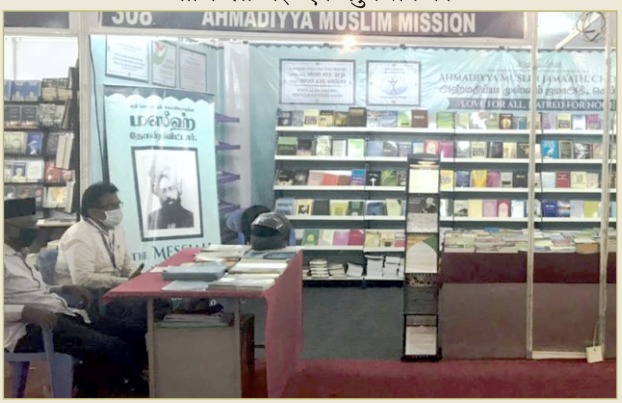

चेन्नई पुस्तक मेला के आयोजन पर जमाअत अहमदिया के स्टाल में मज्लिस अंसारुल्लाह तमिलनाडु के सदस्य सेवा करते हुए।

आदरणीय मुस्लेहउद्दीन सादी मुबल्लिग़ इंचार्ज कोलकाता एवंआदरणीय तारिक महमूद ज़ईम मज्लिस अंसारुल्लाह कोलकाता एक समारोह में सिख अतिथि गण को जमाअत अहमदिया का परिचय करवाते हुए।

तिथि 07 जनवरी 2021 ई. को आदरणीय मुस्लेहउद्दीन सादी मुबल्लिग़ इंचार्ज कोलकाता एवं आदरणीय तारिक महमूद ज़ईम मज्लिस अंसारुल्लाह कोलकाता एक समारोह में एक अतिथि गण को पुस्तक "विश्व संकट और शांति पथ" भेंट करते हुए।

आदरणीय मुहम्मद कलीम खान मुबल्लिग़ इंचार्ज हैदराबाद एवं आदरणीय मुबाशिर अहमद ज़ईम मज्लिस अंसारुल्लाह हैदराबाद एक सरकारी अधिकारी को पवित्र क़ुरआन तेलुगु अनुवाद भेंट करते हुए।

आदरणीय खालिद अहमद अलादीन क़ायद ईसार एवं खिदमत-ए-खल्क मज्लिस अंसारुल्लाह भारत सिकन्दराबाद (तेलंगाना) की एक पाठशाला के विद्यार्थियों को भोजन भेंट करते हुए।

सैन्ट थॉमस चेन्नई (तमिलनाडु) में आयोजित तरबियती इज्लास के पश्चात अतिथि गण एवंआदरणीय शुएब अहमद नायब नाज़िर बैतुल माल आमद क़ादियान, एवं आदरणीय रफ़ीख अहमद मुबल्लिग़ इंचार्ज की ग्रुप फोटो।

सर्व धर्म सम्मेलन के आयोजन पर मज्लिस अंसारुल्लाह कोलकाता के सदस्य जमाअत अहमदिया का संदेश देते हुए।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 19 **अप्रैल 2021** **Issue - 4**

निगरान

अताउल मुजीब लोन

सम्पादक

सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक

शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री

09915379255

मैनेजर

मक़्सूद अहमद भट्टी

Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग

तसनीम अहमद बट्ट

प्रैस

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस

क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹

विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान

ऐवाने अन्सार, भारत

क़ादियान - 143516

ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 01872-220186

फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ

दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय -रमाज़ान के लिए छात्रों की तरह तैय्यार हों।	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन रमज़ान का मूल उद्‌देश्य तक्वा की प्राप्ति है।	6
रमज़ानुल मुबारक और दुआ की कुबूलियत	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْٓ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًی لِّلنَّاسِ وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰی وَ الْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ
الشَّهْرَ فَلْیَصُمْهُ ؕ وَ مَنْ كَانَ مَرِیْضًا اَوْ عَلٰی سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَ ؕ یُرِیْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْیُسْرَ وَ لَا یُرِیْدُ بِكُمُ
الْعُسْرَ ۫ وَ لِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰی مَا هَدٰىكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۶﴾

(सूर: अलबकरह : आयत 186)

अनुवाद: रमज़ान का महीना, जिस में मानवजाति के लिए क़ुर्आन को महान हिदायत के रूप में और ऐसे स्पष्ट चिन्हों के रूप में उतारा गया, जिनमें हिदायत का विवरण और सत्य और असत्य में प्रभेदक विषय हैं । अत: जो भी तुम में से इस महीने को देखे तो इसके रोज़े रखे और जो रोगी हो अथवा यात्रा पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी करनी होगी। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता और चाहता है कि तुम (आसानी से) गिनती को पूरा करो और उस हिदायत के कारण अल्लाह की बड़ाई बखान करो जो उसने तुम्हें प्रदान किया और ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो।

दर्सुल हदीस

عَنْ الرَّبَابِ عَنْ عَمِّهَا سَلْمَانَ بْنِ عَامِرٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ یَبْلُغُ بِهِ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِذَا اَفْطَرَ اَحَدُكُمْ فَلْیُفْطِرْ عَلٰی تَمْرٍ فَاِنَّهُ بَرَكَةٌ فَاِنْ لَمْ یَجِدْ تَمْرًا فَالْمَاءُ فَاِنَّهُ طَهُوْرٌ، وَقَالَ
اَلصَّدَقَةُ عَلَی الْمِسْكِیْنِ صَدَقَةٌ وَهِیَ عَلٰی ذِی الرَّحِمِ ثِنْتَانِ صَدَقَةٌ وَصِلَةٌ۔

(तिरमिज़ी किताबुज़ज़कात बाब फिस्सदका अला ज़िल-कराब)

अनुवाद::हज़रत रबाब रज़ि अल्लाह तआला अपने चाचा हज़रत सलमान आमिर रज़ि वर्णन करती हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया इफतारी खजूर से करो और अगर खजूर किसी को उपलब्ध न हो तो सादा पानी से करो। और इसी तरह फरमाया कि किसी ग़रीब की सहायता करना तो केवल सदक़ा है परन्तु किसी ग़रीब सगे सम्बन्धी की सहायता करना दुगना सवाब का कारण है। यह सदक़ा भी है और सिला रहमी भी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

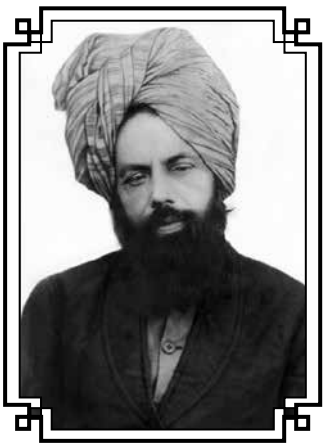

फ़िद्या किस लिए निर्धारित किया गया है।

"एक बार मेरे दिल में आया कि यह फ़िद्या किस लिए निर्धारित किया गया है तो मालूम हुआ कि तौफ़ीक़ के लिए है ताकि रोज़ा का सामर्थ्य इस से प्राप्त हो। ख़ुदा ही की ज़ात है जो तौफ़ीक़ प्रदान करती है और प्रत्येक चीज़ ख़ुदा ही से मांगनी चाहिए। ख़ुदा तआला तो सामर्थ्यवान है। वह अगर चाहे तो एक बीमार को भी रोज़ा की शक्ति प्रदान कर सकता है। तो फ़िद्या से यही अभीष्ट है कि वह शक्ति प्राप्त हो जाए और यह ख़ुदा के फ़ज़ल से होता है। अत: मेरे निकट ख़ूब है कि दुआ करे कि इलाही यह तेरा एक मुबारक महीना है और मैं इस से वंचित रहा जाता हूँ और क्या पता कि अगले वर्ष जीवित रहो न या उन फ़ौत हुए रोज़ों को अदा कर सकूं या न और इस से तौफ़ीक़ मांगे तो मुझे विश्वास है कि ऐसे दिल को ख़ुदा ताक़त प्रदान कर देगा।

यदि ख़ुदा चाहता तो दूसरी उम्मतों की तरह इस उम्मत में कोई क़ैद न रखता। परन्तु उस ने क़ैदें भलाई के लिए रखी हैं। मेरे निकट मूल यही है कि जब इन्सान सच्चाई और कमाल श्रद्धा से आल्लाह तआला की सेवा में निवेदन करता है कि इस महीना में मुझे वंचित न रख तो ख़ुदा उसे वंचित नहीं रखता और ऐसी आवस्था में यदि इन्सान महीना रमज़ान में बीमार हो जाए तो यह बीमारी उस के हक़ में रहमत होती है क्योंकि हर एक कर्म का नींव नियत पर है। मोमिन को चाहिए कि वह अपने वजूद से अपने आपको ख़ुदा तआला की राह में बहादुर साबित कर दे। जो शख़्स कि रोज़े से वंचित रहता है परन्तु उस के दिल में यह नियत दर्दे दिल से थी कि काश मैं तंदरुस्त होता और रोज़ा रखता और इस का दिल इस बात के लिए रोता है तो फ़रिश्ते उस के लिए रोज़े रखेंगे परन्तु शर्त यह है कि वह बहाना बनाने वाला न हो तो ख़ुदा ताला उसे हरगिज़ सवाब से वंचित न रखेगा। यह एक सूक्ष्म बात है कि यदि किसी व्यक्ति पर (अपने नफ़स की सुस्ती) के कारण से रोज़ा बोझ है और वह अपने ख़्याल में सोचता है कि मैं बीमार हूँ और मेरी सेहत ऐसी है कि यदि एक वक़्त न खाऊं तो अमुक़ अमुक़ बीमारियां लग जाएंगी और ये होगा और वह होगा तो ऐसा आदमी जो ख़ुदा की नेअमत को ख़ुद अपने ऊपर बोझ धारणा करता है कब इस सवाब का अधिकारी होगा। हाँ वह व्यक्ति जिसका दिल इस बात से ख़ुश है कि रमज़ान आ गया और इस की मैं प्रतीक्षा कर रही था कि आए और रोज़ा रखूं और फिर वह बीमारी के कारण से नहीं रख सका तो वह आसमान पर रोज़े से महरूम नहीं है। इस दुनिया में बहुत लोग बहाना करते हैं और वह ख़्याल करते हैं कि हम जैसे दुनिया वालों को धोखा दे लेते हैं वैसे ही ख़ुदा को धोखा देते हैं। बहाना करने वाले अपने वजूद से आप मसला बनाते हैं और शंकाएं शामिल कर के उन माध्यमों को सही गिनते हैं। लेकिन ख़ुदा के निकट वह सही नहीं शंकाओं का आध्याय बहुत बड़ा है यदि इन्सान ख़ुदा चाहे तो उस के रूह से सारी उम्र बैठ कर नमाज़ पढ़ता रहे और रमज़ान के रोज़े बिलकुल ही न रखे परन्तु ख़ुदा उस की नियत और इरादा को जानता है जो सच्चाई और श्रद्धा रखता है। ख़ुदा जानता है कि उस के दिल में दर्द है और ख़ुदा उसे सवाब से अधिक भी देता है। क्योंकि दर्दे दिल एक सम्मान योग्य चीज़ है। बहाना करने वाला इन्सान तावीलों पर भरोसा करते हैं परन्तु ख़ुदा के निकट यह भरोसा कोई चीज़ नहीं जब मैं ने छ: महीने रोज़े रखे थे तो एक बार नबियों का एक गिरोह मुझे मिला (कशफ़ में) और उन्होंने कहा कि तूने क्यों अपने नफ़स को इतना परेशानी में डाला हुआ है। इस से बाहर निकल। इसी तरह जब इन्सान अपने आपको ख़ुदा के लिए कठिनाई में डालता है तो वह ख़ुद माँ बाप की तरह रहम कर के उसे कहता है कि तू क्यों कठिनाई में पड़ा हुआ है।"

(अलबदर दिनांक 12/दिसम्बर 1902 ई पृष्ठ 52 कालम नंबर 3 पृष्ठ 53 कालम नम्बर 1 मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 563,564 प्रकाशन 2003 ई)

सम्पादकीय

रमज़ान के लिए छात्रों की तरह तैयारी करें।

यह एक हक़ीक़त है कि इस मशीनी युग में पूरी दुनिया एक Global Village बनने के बावजूद लोगों में इतनी दूरी है कि पड़ोस से भी परिचित नहीं होते । एक सर्वे के अनुसार आज 57 प्रतिशत नौजवान लड़के और लड़कियां इंटरनैट पर अजनबी लोगों से दोस्ती करते हुए टाइम पास करते हैं , विभिन्न ख़तरों में घिरे जा रहे हैं। यदि लोग ख़ुदा को अपना दोस्त बनाते तो ज़िंदगी में कभी निराश न होते। रमज़ान में ख़ुदा को दोस्त बनाने और उस की प्रसन्नता को पाने के लिए बहुत अधिक सहयोगी मौसम होताहै। क्योंकि हर तरफ़ नेकी का परिवेश स्थापित हो जाता है। इस लिए इस्तिग़फ़ार, दुरूद और अन्य दुआओं से अपनी ज़बानें भिगो कर रखनी चाहिऐं। अल्लाह के अधिकारों और बन्दों के अधिकारों में अपने माल, अपने समय को भी धर्म की सेवा में व्यतीत करना चाहिए। सबसे पहले हमें चाहिए कि रमज़ान से पहले ठीक नियत से रमज़ान का स्वागत करते हुए दुआ करते रहें। दुनियावी कामों को जिस सीमा तक हो सके उस रंग में समाप्त कर लें कि रोज़ों में और इबादत में परेशानी न हों। रमज़ान के महत्तव के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

" यह महीना दिल को प्रकाशित करने के लिए उत्तम महीना है। बहुत अधिक इस में मुकाशफ़ात होते हैं। नमाज़ नफ़्स को पवित्र करती है और रोज़े दिल को प्रकाशित करते हैं। नफ़्स की पवित्रता से अभिप्राय यह है कि नफ़्स अम्मारा की कामनाओं से दूरी प्राप्त हो जाए और दिल की तजल्ली से अभिप्राय यह है कशफ़ का दरवाज़ा इस पर खुले कि ख़ुदा को देख ले।

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 561-562)

रमज़ान का महीना असंख्य बरकतों का महीना है। 1400 वर्षों से लाखों नेक और पवित्र इन बरकतों को देखते आए हैं। इन मुबारक दिनों में मुख़लिस रोज़ा रखने वालों की दुआएं सुनी जाती हैं, उन पर नूर के दरवाज़े खोले जाते हैं। रोज़ादार के लिए ज़रूरी है कि रोज़ादार प्रत्येक समय नफ़लों,ज़िक्रे इलाही और दुआओं में व्यस्त रहे , हर प्रकार की व्यर्थ बातों से बचे। वास्तव में इस्लाम ने कुछ व्यक्तिगत और कुछ सामुहित बरकतों को रमज़ान के साथ विशेष कर दिया है। जिनसे लाभ उठाते हुए रमज़ान व्यतीत करना चाहिए।

उदाहरणता एक नमाज़े तहज्जुद और नमाज़ तरावीह है। दूसरा कुरआन मजीद की तिलावत है तीसरा दर्सुल क़ुरआन है। चौथी प्रमुख इबादत रमज़ानुल मुबारक में एतकाफ़ है। छठै लैलतुल क़द्र भी है। इन समस्त इबादतों की अदायगी के लिए इख़लास के साथ भरपूर कोशिश करनी चाहिए।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"अत: रमज़ान आया है तो अपनी इबादतों के स्तर भी हमें बुलंद करने की ज़रूरत है और अपने कर्मों पर नज़र रखते हुए उन को अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार ढालने की ज़रूरत है। एक छात्र की तरह जो परीक्षा की तैयारी के लिए मेहनत करते हुए रातों को दिन कर देता है। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हम भी अपनी रातों को इन दिनों में अल्लाह तआला के लिए गुज़ारने की कोशिश करेंगे तो वह रहीम तथा करीम ख़ुदा,अपने वाादा के अनुसार हमें अपनी रज़ा की राहों पर डालेगा। हमें उन रास्तों की तरफ़ लाएगा जो उस की रज़ा के रास्ते हैं। हमें उन इनामों से नवाज़ेगा जिन से वह अपने विशेष बंदों को नवाज़ता है। हमारे तक़्वा के स्तरों को वहां तक ले जाएगा जहां उस का कुर्ब प्राप्त होता है।"

(ख़ुत्बा जुम्अ:14 सितम्बर 2007 ई)

अल्लाह तआला हम सबको रमज़ान के इन मुबारक दिनों को इस रंग में गुज़ारने की तौफ़ीक़ दे ।

(हाफिज़ सय्यद रसूल नयाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

रमज़ान का मूल उद्देश्य तक़्वा की प्राप्ति है।

यह अल्लाह तआला का बेहद उपकार है कि जिस जिस विषय की अधिक ज़रूरत है और जिस शिक्षा को धारण कर के हम अल्लाह तआला का अधिक सानिध्य प्राप्त कर सकते हैं उसे उसने बहुत अधिक स्पष्टता के साथ और बार-बार ज़िक्र फ़र्मा कर उस का महत्तव दिलों में बिठाने की चेष्ठा फ़रमाई है ताकि अधिक से अधिक लोग उस के कामिल और श्रद्धावान बंदे बन सकें। तक़्वा का विषय प्रमुख विषयों में से एक है और यदि यह कहा जाए कि क़ुरआन करीम की शिक्षाओं का सार तक़्वा है तो यह बिल्कुल ठीक है। क़ुरआन करीम में इस का लगभग 250 बार वर्णन आया है किसी और विष्य को इनी अधिकता के साथ वर्णन नहीं किया गया। तक़्वा के कई स्तर हैं जिनकी कोई सीमा नहीं है। जितना कोई इन्सान परहेज़गारी और ख़ुदा तआला के भय को हर मौक़ा पर समक्ष रखेगा उतना वह क़ुरबे इलाही में बढ़ता चला जाएगा और रूहानियत के उच्च स्तर पर स्थापित होगा। रोज़ों का उद्देश्य तक़्वा है। जैसा कि अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में रोज़ा के फर्ज़ होने के हवाला से वर्णन करता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

(अलबकर184)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े इसी तरह फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम तक़्वा धारण करो।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार उन को सम्बोधित कर के फ़रमाया। हे अबूहुरैरा तक़्वा और परहेज़गारी धारण कर। तू सबसे बड़ा इबादत करने वाला बन जाएगा। क़नाअत धारण कर तू सबसे बड़ा शुक्रगुज़ार गिना जाएगा। जो अपने लिए पसंद करते हो वही दूसरों के लिए पसंद करो तो सही मोमिन समझे जाओगे। जो तेरे पड़ोस में रहता है , उस से अच्छे पड़ोसियों वाला व्यवहार करो तो सच्चे और हक़ीक़ी मुस्लिम कहला सकोगे। कम हंसा करो क्योंकि बहुत ज़्यादा क़हक़हे लगा कर हँसना दिल को मुर्दा बना देता है।

(इब्न माजा किताबुल ज़हद बाब वत्तक़वा)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"तीसरी बात जो इस्लाम का अंग है वह रोज़ा है.... इन्सानी फ़ित्रत में है कि जितना कम खाता है उतनी क़दर नफस पवित्र होता है और कशफ़ की क़ुव्वतें बढ़ती हैं। ख़ुदा तआला की इच्छा इस से यह है कि एक ख़ुराक को कम करो और दूसरी को बढ़ाओ। हमेशा रोज़ादार को यह समक्ष रखना चाहिए कि इस से इतना ही अभिप्राय नहीं है कि भूखा रहे बल्कि उसे चाहिए कि ख़ुदा तआला के वर्णन में व्यस्त रहे ताकि अल्लाह तआला की झुकना और संयम प्राप्त हो।"

(तफ़सीर भाग1 पृष्ठ 440)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं

"لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ में रोज़ों का एक और लाभ यह भी बताया गया है कि इस के नतीजा में

तक़्वा पर दृढ़ता प्राप्त होती है और इन्सान को रूहानियत के उच्च स्तर प्राप्त होते हैं। अत: रोज़ों के नतीजा में केवल धनवाल ही अल्लाह तआला का क़ुरब प्राप्त नहीं करते बल्कि ग़रीब भी अपने अंदर एक नया रुहानी इन्क़िलाब महसूस करते हैं और वे भी अल्लाह तआला के विसाल से लुतफ़ प्राप्त करते हैं।"

(तफ़सीर कबीर भाग 2 पृष्ठ 377)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"हर अहमदी (मोमिन) को तक़्वा में तरक़्क़ी करने के लिए , अल्लाह तआला की जन्नतों का वारिस होने के लिए , अल्लाह तआला के मुक़ाम की पहचान ज़रूरी है और यह पहचान उस वक़्त होगी जब ख़ालिस अल्लाह तआला के होते हुए उस के आदेशों पर अनुकरण करोगे और अल्लाह तआला ने इन आदेशों में से एक आदेश रमज़ान में रोज़ों की पाबन्दी का हमें दिया है।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 14 सितम्बर 2007 ई ख़ुत्बात मसरूर जल्द 5 पृष्ठ 374)

हर एक नेकी की जड़ यह इत्तिक़ा है
अगर यह जड़ रही सब कुछ रहा है

दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको अल्लाह तआला के आदेशों की पाबंदी के साथ रोज़े रखने और तक़्वा प्राप्त करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

रमज़ान उल-मुबारक और दुआ की क़बूलीयत

सय्यद कलीमुद्दीन अहमद,
क़ाइद मज्लिस अन्सारुल्लाह, भारत

रमज़ानुल मुबारक का महीना अल्लाह तआला की रहमतों,बरकतों और क़बूलीयत दुआ का विशेष महीना है। यद्यपि उस की रहमतें प्रत्येक क्षण उस की सृष्टि पर बरसती रहती है लेकिन कुछ विशेष दिन और रात और महीने ऐसे भी हैं जिनमें अल्लाह तआला अपने बंदों पर बे शुमार रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।

हमारे आक़ा हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है।

"जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरोज़े खोल दिए जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और शैतान को जकड़ दिया जाता है।"

(बुख़ारी, किताबुस्सौम)

फिर सबसे प्रमुख बात यह कि क़ुरआन मजीद में इस मुबारक महीना की फ़ज़ीलत वर्णन हुई है। अल्लाह तआला फ़रमाता है شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ (सूरह बक़रा आयत 186) अर्थात रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन इन्सानों के लिए एक महान हिदायत के तौर पर उतारा गया और ऐसे खुले निशानों के तौर पर जिनमें हिदायत का विस्तार और सच्चतथा झूठ में अन्तर कर देने वाले मामले हैं।

रोज़ा एक ऐसी इबादत है जिसके बेशुमार सांसारिक तथा आख़रत के लाभ हैं। इस का एक सम्बन्ध क़बूलीयत दुआ से विशेष है।

अल्लाह तआला ही मांगने वालों को प्रदान करता है। अल्लाह तआला ख़ुद अपने बंदों को यक़ीन दिला रहा है कि तुम्हारी दुआ क़बूल की जाएगी। इस से बढ़ कर दुआ की क़बूलीयत के बारे और क्या ज़मानत दी जा सकती है। अल्लाह ताला फ़रमाता है।وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (मोमिन 61)अर्थात तुम्हारे रब ने कहा मुझे पुकारो मैं तुम्हें जवाब दूँगा।

क़बूलीयत दुआ के बारे में से हमारे आक़ा हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला बहुत शर्म वाला,बड़ा दयालु और कृपालु है। जब बंदा उस के हुज़ूर अपने दोनों हाथ ऊंचा करता है तो वह उनको ख़ाली और असफल वापस करने से शरमाता है। अर्थात सच्चे दिल से मांगी हुई दुआ को वह रद्द नहीं करता बल्कि स्वीकार फ़रमाता है। (तिर्मिज़ी,किताबुद्दअवात)

अल्लाह तआला यह पसंद फ़रमाता है कि मेरे बंदे मुझे मांगें और मैं उन्हें दूं। मानो मांगने पर अल्लाह तआला ख़ुश होता है और न मांगने वालों से नाराज़ होता है। जैसा कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो बंदा अल्लाह तआला से न मांगे इस से अल्लाह नाराज़ होता है क्योंकि अल्लाह तआला से दुआ न करना अहंकरा की निशानी है।

फिर हज़रत अबूहुरैरह रज़ि से ही एक रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया "हमारा रब हर रात क़रीबी आसमान तक नुज़ूल फ़रमाता है। जब रात का तीसरा हिस्सा बाक़ी रह जाता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि कौन है जो मुझे पुकारे तो मैं इस को जवाब दूं ! कौन है जो मुझसे मांगे तो मैं उस को दूं! कौन है जो मुझ से क्षमा मांगे करे तो मैं उस को प्रदान कर दूं।"

(तिर्मिज़ी , किताब अलदावात)ओ

यद्यपि क़बूलीयत दुआ का दरवाज़ा हमेशा के लिए खुला है लेकिन रमज़ानुल मुबारक के महीना से इस का

एक विशेष और गहरा सम्बन्ध भी है जैसा कि क़ुरआन मजीद और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान और अनुकरण से साबित है।

फिर क़बूलीयत दुआ का सम्बन्ध रमज़ानुल मुबारक से ख़ास होने का सबसे बड़ा सबूत क़ुरआन मजीद की यह आयत है जिसमें अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ

(सूरह अलबकर: 187) अनुवाद और जब मेरे बंदे तुझसे मेरे बारे में सवाल करें तो यक़ीनन में क़रीब हूँ। मैं दुआ करने वाले की दुआ का जवाब देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है। अत: चाहिए कि वह भी मेरी बात पर लब्बैक कहीं और मुझ पर ईमान लाएंगे ताकि वे हिदायत पाएं।

इस आयत में जो क़बूलीयत दुआ का अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है इस का सम्बन्ध रमज़ान से विशेष है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी इस आयत की तफ़सीर करते हुए फरमाते हैं:

"फ़रमाता है। हे मेरे रसूल !जब मेरे बंदे मेरे बारे में तुझ से सवाल करें और पूछें कि हमारा ख़ुदा कहाँ है। जैसे आशिक़ पूछता फिरता है कि मेरा महबूब कहाँ है। तो तू उन्हें कह दे कि तुम घबराओ नहीं मैं तो तुम्हारे बिलकुल क़रीब हूँ। यहां "इबादी" से अभिप्राय अल्लाह तआला के आशिक़ ही हैं और अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिस तरह आशिक़ हर जगह दौड़ा फिरता है और कहता है मेरा माशूक़ कहाँ है। इसी तरह जब मेरे बंदे तुझ से मेरे बारे में पूछें तो तू उन्हें कह दे कि घबराओ नहीं मैं तुम्हारे क़रीब ही हूँ क्योंकि अल्लाह तआला अपने आशिकों के दिल को तोड़ना नहीं चाहता।

फिर फ़रमाता है मेरे क़रीब होने का सबूत यह है कि اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ जब कोई व्यक्ति सम्पूर्ण तड़प और विनय के साथ मुझ से दुआ करता है तो मैं इस की दुआ को क़बूल कर लेता हूँ और यह सबूत होता है इस बात का कि मैं क़रीब हूँ। अगर मैं दूर होता तो मैं उसकी सज्दे की धीमी आवाज़ को भी कैसे सुन सकता और अगर मैं दूर होता तो उस के एकान्त में बैठे हुए हाथ उठा कर या क़ियाम की अवस्था में धीमी आवाज़ वाली दुआ कैसे सुन लेता। मेरा इस दुआ को सुन लेना बताता है कि मैं इस के क़रीब हूँ।"

इसी तरह हुज़ूर फ़रमाते हैं:

"समस्त खाने और सब्ज़ियां बोने का एक विशेष समय होता है अगर उस वक़्त को समक्ष न रखा जाए तो कुछ भी नहीं होता। परन्तु वे वक़्त जादू या टोने की तरह नहीं होता कि इस के आने से कोई विशेष प्रभाव पैदा हो जाता है। इस लिए वह काम हो जाता है बल्कि अभिप्राय यह है कि जिस वक़्त किसी कामयाबी के सामान सूक्ष्म हो जाते हैं तो वही उस के करने का वक़्त होता है। अगर गेहूँ का दाना एक ख़ास वक़्त में बोने से उगता है तो इस का यह अर्थ नहीं कि इस वक़्त इस में कोई ख़ास बात पैदा हो जाती है बल्कि उस के उगने के लिए जो सामान ज़रूरी होते हैं वो उस वक़्त मुहय्या हो जाते हैं। अगर वही सामान किसी दूसरे वक़्त मुहय्या हो सकें तो उस वक़्त भी वे ज़रूर उग जाएगा। तो समस्त कामों के लिए ज़रूरी सामान मुहय्या होने का एक समय निर्धारित है। इसी तरह दुआ के लिए भी वक़्त निर्धारित हैं। उन वक़्तों में की हुई दुआ भी बहुत बड़े नतीजे पैदा करती है। जैसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि اِتَّقُوْا دَعْوَةَ الْمَظْلُوْمِ पीड़ित की बद-दुआ से डरो क्योंकि जब वे हर तरफ़ मुसीबतें ही मुसीबतें देखता और ख़ुदा तआला के सिवा कोई सहारा नहीं पाता तो इस का समस्त ध्यान ख़ुदा तआला की तरफ़ फिर जाता है और वह ख़ुदा तआला के आगे गिर पड़ता है और इस वक़्त वो जो भी दुआ करता है क़बूल हो जाती है क्योंकि दुआ के क़बूल होने के सामानों में से एक उच्च दर्जा का सामान यह भी है कि इन्सान का सारा ध्यान हर तरफ़ से हटकर ख़ुदा तआला ही की तरफ़ हो जाएं। चूँकि पीड़ित की यही

हालत होती है इसलिए उस के लिए भी यह एक अवसर पैदा हो जाता है।

इसी तरह दुआ के क़बूल होने के समय भी हैं लेकिन वह ज़ाहरी सामानों की हद-बंदियों के नीचे नहीं होते बल्कि वह इन्सानी दिलों की विशेष हालतों और अवस्थायों से सम्बन्ध रखते हैं। जिन्हें वही इन्सान महसूस कर सकता है जिस पर वह हालत आती हो। परन्तु दुआ की क़बूलीयत का एक और वक़्त भी है जिसके मालूम करने के लिए सुक्ष्म दिल की अवस्था से परिचित होने की ज़रूरत नहीं होती और वह वक़्त रमज़ान का महीना है। यह आयत ख़ुदा तआला ने रोज़ों के साथ वर्णन की है जिससे पता लगता हैकि उस का रोज़ों से बहुत गहरा सम्बन्ध है और उस के रोज़ों के साथ वर्णन करने का कारण यही है कि जिस तरह पीज़ित की सारा ध्यान सीमित हो कर एक ही तरफ़ अर्थात ख़ुदा तआला की तरफ़ लग जाता है। इसी तरहमाह रमज़ान में मुस्लमानों का ध्यान ख़ुदा तआला की तरफ़ हो जाता है और नियम है कि जब कोई फैली हुई चीज़ सीमित हो जाएगी तो इस का ज़ोर बहुत बढ़ जाता है जैसे दरिया का पाट जहां तंग होता है वहां पानी का बड़ा ज़ोर होता है। इसी तरह रमज़ान के महीना में वे माध्यम पैदा हो जाते हैं जो दुआ की क़बूलीयत का कारण बन जाते हैं। इस महीना में मुस्लमानों में एक बहुत बड़ी जमाअत ऐसी होती है जो रातों को उठ उठ कर अल्लाह तआला की इबादत करती है। फिर सहरी के लिए रात को उठना पड़ता है और इस तरह हर एक को कुछ न कुछ इबादत का मौक़ा मिल जाता है। इस वक़्त लाखों इन्सानों की दुआएं जब ख़ुदा तआला के हुज़ूर पहुँचती हैं तो ख़ुदा तआला उन को रद्द नहीं करता बल्कि उन्हें क़बूल फ़रमाता है। इस वक़्त मोमिनों की जमाअत एक वेदना की अवस्था में होती है। फिर किस तरह संभव है कि उन की दुआ क़बूल न हो। दर्द और वेदना की हालत की दुआ ज़रूर सुनी जाती है। जैसे यूनस क़ौम की हालत को देखकर ख़ुदा तआला ने उनको बख़्श दिया और उन से अज़ाब टल गया। इस का कारण यही थी कि वह सब इकट्ठे हो कर ख़ुदा तआला के हुज़ूर झुक गए थे।

(तफ़सीर कबीर,भाग 2, पृष्ठ 399 से 409)

फिर हज़रत अक़दस मसीहमौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ का महत्तव और बरकतों का वर्णन करते हुए फ़रमाया है: "साँप के ज़हर की तरह इन्सान में ज़हर है। इसका इलाज दुआ है जिसके माध्यम से आसमान से चश्मा जारी होता है। जो दुआ से ग़ाफ़िल है वह मारा गया। एक दिन और रात जिसकी दुआ से ख़ाली है वह शैतान से क़रीब हुआ। हर रोज़ देखना चाहिए कि जो हक़ दुआओं का था वह अदा किया है कि नहीं।"

(मल्फ़ूज़ात ,भाग 3 पृष्ठ 591)

फिर फ़रमाते हैं "अगर तुम लोग चाहते हो कि ख़ैरीयत से रहो और तुम्हारे घरों में अमन रहे तो उचित है कि दुआएं बहुत करो और अपने घरों को दुआओं से भर दो। जिस घर में हमेशा दुआ होती है ख़ुदा तआला उसे बर्बाद नहीं किया करता।

(मलफ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 232)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहलि अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"अत: अल्लाह तआला बेशक अपने बंदों के सवाल के जवाब में यह कहता है कि मैं क़रीब हूँ, मैं अपने बंदे की दुआओं को सुनता हूँ और इस महीना में खासतौर पर तुम्हारे क़रीब आ गया हूँ मुझे पुकारो लेकिन अपनी दुआओं की क़बूलीयत के लिए मुझे पुकारने से पहले यह शर्त है कि मेरी सुनो। मेरे आदेशों पर अनुकरण करो। और मेरी सारी ताक़तों पर पूर्ण यक़ीन और ईमान रखो। इन शर्तों पर तुम्हें अनुकरण करना होगा।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 जून 2016 ई)

दुआ है अल्लाह तआला हम सबको हमेशा और विशेष रूप से रमज़ान में सही अर्थों में दुआएं करने और ख़ुदा तआला का सानिध्य प्राप्त करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन